UG study material for students of History

Subject : History

Class : UG Semester IV
Paper : MJC - VI

Topic : Rise of Napoleon Bonaparte - I
(नेपोलियन बोनापार्ट का उदय - I)

By : Dr. Rajiv Nayan
Associate Professor,
Dept. of History,
Jagjiwan College, Ara

Scanned by CamScanner

Page No
Date

नेपोलियन बोनापार्ट का उदय - I
(Rise of Napoleon Bonaparte) - I

तीस साल का होने से पहले ही नेपोलियन बोनापार्ट फ्रांस का शिखर-पुरुष बन जाएगा - ऐसी भविष्यवाणी उसका कोई समीपवर्ती भी नहीं कर सकता था। वह 15 अगस्त, 1769 को कॉर्सिका टापू पर पैदा हुआ। परिवार गरीब था, हालाँकि कभी शासक-वर्ग से संबंधित होने का दावेदार भी था। कॉर्सिका के निवासी इटालवी भाषा-भाषी और उसी परम्परा के लोग थे। कई पीढ़ियों से वे जेनेवा गणतंत्र के अधीन रहे। 18वीं सदी के मध्य में एक दृढ़ निश्चयपूर्ण प्रयास के द्वारा उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्त की। जब जेनेवा वालों ने देखा कि वे उनके सशस्त्र विद्रोह को दबा नहीं सकते तो यह टापू उन्होंने 1768 में लुई-15 के हवाले कर दिया। (हालाँकि नेपोलियन इटालवी मूल का था, वह फ्रांसीसी प्रजा के रूप में पैदा हुआ।) अतः नेपोलियन के जन्म के समय फ्रांसीसी वहाँ के लोगों पर अपना प्रभाव कायम करने में व्यस्त थे, जो बहादुरीपूर्वक उनका प्रतिरोध कर चुके थे, लेकिन पराजित थे।
"मैं तब पैदा हुआ, जब मेरा देश मर रहा

Scanned by CamScanner

था।" – नेपोलियन का यह कथन बिल्कुल सत्य था।

अपने देश के निर्मूलन से क्षुब्ध नेपोलियन देशभक्तिपूर्ण भावना के साथ बड़ा होने लगा। उसके पिता ने अपने सामंती दर्जे को सरकारी मान्यता दिलाने में सफलता प्राप्त की। फलस्वरूप बोनापार्ट 10 साल की उम्र में शाही सैनिक अकादमी में वजीफा प्राप्त कर सका।

इस प्रकार, नेपोलियन का राजनीतिक जीवन एक मामूली सैनिक के रूप में आरंभ हुआ। अपने सैनिक-प्रशिक्षण के दौरान उसने दार्शनिकों का साहित्य पढ़ा। वह रूसो का उत्साही अनुयायी बन गया; जिसे कालान्तर में उसने ठुकरा भी दिया।

फ्रांसीसी क्रांति के दिनों में वह कोर्सिका से पेरिस आया और जैकोबिन दल का एक सदस्य बन गया। फिर उसे सेना में एक छोटा-सा पद मिला। पेरिस की उग्र भीड़ को नियंत्रित और दबाने के कारण उसकी ख्याति बढ़ गयी और वह गृह-सेना का सेनापति नियुक्त किया गया। उस समय फ्रांस का आस्ट्रिया से युद्ध चल रहा था। नेपोलियन की इच्छा थी कि डॉयरेक्टरी शासन उसे आस्ट्रिया के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई करने के लिए इटली जाने की अनुमति दे। यह अनुमति उसे मिल गयी और वह 1797 ई० में अपने प्रथम इटालवी अभियान हेतु

निकल पड़ा। इसके नेतृत्व में फ्रांसीसी सेना ने आस्ट्रिया के विरुद्ध इटली में अनेक चमत्कार किये, आस्ट्रिया पराजित हुआ तथा इटली के एक बड़े भू-भाग पर नेपोलियन ने अधिकार कर लिया। नेपोलियन की विजयों के फलस्वरूप फ्रांस विरोधी यूरोपीय राज्यों का प्रथम गुट बिखर गया। नेपोलियन का यश यूरोप भर में फैल गया।

केवल इंग्लैंड ही एक ऐसा देश था जो अभी फ्रांस के विरुद्ध टिका हुआ था। इंग्लैंड को हराना काफी कठिन था; क्योंकि फ्रांस की नौ सेना इंग्लैंड से कमजोर थी। अतः, नेपोलियन ने इंग्लैंड को भारत में पराजित करने की योजना बनायी और एक विशाल सेना लेकर फ्रांस से रवाना हुआ। जब अंग्रेजों को इस योजना की भनक मिली तब उन्होंने नेपोलियन के मनसूबों को चकनाचूर करने के उद्देश्य से एडमिरल नेल्सन को भेजा। नील नदी के मुहाने पर इन दोनों में भिड़ंत हुई और नेपोलियन बुरी तरह से पराजित हो गया। उसकी समस्त आशाओं पर तुषारापात हो गया। निराश होकर कुछ दिनों तक वह अलेक्जेन्ड्रिया में बैठा रहा, पर जब फ्रांस की कठिनाइयों की सूचना उसके पास पहुँचने लगी, तब वह स्वदेश लौटने के

Scanned by CamScanner

लिये आतुर हो उठा। 9 अक्टूबर, 1799 को वह पेरिस पहुँचा। डॉयरेक्टरी के भ्रष्ट, अयोग्य और अकुशल शासन से फ्रांसीसी जनता तंग आ चुकी थी वे एक ऐसे योग्य व्यक्ति को नेता मानने को तैयार थे, जो उन्हें इन कठिन परिस्थितियों से छुटकारा दिला पाता। नेपोलियन ने फ्रांसीसियों के इस मनोभाव से फायदा उठाया और कुछ सैनिक अधिकारियों से मिल-जुलकर डॉयरेक्टरी के शासन का अन्त करने का निश्चय किया। अपनी तैयारियाँ पूरी करने के उपरान्त नवम्बर, 1799 ई० में उसने डॉयरेक्टरी - शासन का तख्ता पलट दिया और फ्रांस की व्यवस्थापिका ने एक प्रस्ताव पारित करके उसे प्रथम कॉन्सल के पद पर नियुक्त कर दिया। दो और कॉन्सल बहाल हुए। तीन कॉन्सलों की यह 'कॉन्स्युलेट' फ्रांस की नई कार्यकारिणी थी। इस 'कॉन्स्युलेट' को फ्रांस के लिए एक संविधान बनाने का आदेश दिया गया। नये संविधान के द्वारा सारे देश का शासन एक व्यक्ति अर्थात प्रथम कॉन्सल को सौंप दिया गया। इस प्रकार नेपोलियन ने अपने विरोधियों को कुचल दिया और अपना स्वेच्छाचारी शासन कायम कर लिया।